ISSN : 2320–1274

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वेब अंक
www.notnul.com

जनवरी-फरवरी-
मार्च-अप्रैल, 2024

मूल्य : 100 रुपये

परिसंवाद

इक्कीसवीं शताब्दी का
सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य

●

नयी सदी : नयी कलम

नयी सदी के
कुछ कथाकारों का मूल्यांकन

वेब अंक
www.notnul.co

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वर्ष 18 अंक 104, **जनवरी-फरवरी, मार्च-अप्रैल, 2024**

रेखांकन:
सुषमा सिन्हा

संपादक
शंकर

संपादक-मंडल
डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह
हरियश राय
महेश दर्पण

सौजन्य-सपादक
अरुण कुमार
अशोक शाह

विषय सूची 1

संपादकीय

नयी सदी : नयी कलम 4

कविताएँ

आखिर कहीं तो है देश — डॉ. शंभुनाथ 7

परिसंवाद

इक्कीसवीं शताब्दी का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य — 12
जानकीप्रसाद शर्मा • विभूतिनारायण राय • डॉ. व्रजकुमार पांडेय • अरुण कुमार • सूर्यनाथ सिंह • राजाराम भादू

सूफी साहित्य

हजरत शाह हुसैन : साझी संस्कृति का चिराग — ज्ञान चन्द बागड़ी 35

वचारभूमि

साँच कहौं तो है नहीं — अशोक शाह 42

लेख

कथेतर गद्य की दुनिया — हरियश राय 46

लेख

पिछली सदी के उत्तरार्द्ध की कहानियाँ : सामर्थ्य व सम्भावनाएँ — डॉ. शिवचंद प्रसाद 56

सम्पादकीय पता
102, बुडबरी टावर
चार्मवुड विलेज
सूरजकुंड रोड, फरीदाबाद-121009

प्रकाशन-कार्यालय
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन 1ई,
वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा
दिल्ली-110032

दूरभाष
सम्पादकीय/व्यवस्थापकीय 09431336275, 08826011824
कार्यालय (0129) 4116726, 09555670600

email : parikatha.hindi@gmail.com

संयुक्त संपादक
अरविंद कुमार सिंह

संपादन-सहयोगी
अजय मेहताब
रवि कुमार
दीपक कुमार गोंड

कला : जयंत
कानूनी सलाह : उत्कर्ष

क्षेत्रीय समन्वयक
अवधेश द्विवेदी

पत्रिका

'सापेक्ष' पत्रिका की रचना यात्रा — डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव — 62

चौपाल

जीवन-जल — नर्मदेश्वर — 67

उपन्यास-अंश

काँधों पर घर — प्रज्ञा — 70

कहानियाँ

जाड़ा — संजय कुमार सिंह — 76
मरा हुआ आदमी — गजेंद्र रावत — 79
नेमप्लेट — आशीष दशोत्तर — 83
आधी संतान — प्रो. तराना परवीन — 88
ब्लैक मनी पिंक मनी — मीना झा — 92
लाल टोपी वाला — रंजना जायसवाल — 99
एक हीरो, एक लादेन — देवेश पथ सारिया — 102
गिरते पर्दे — रोशनी रावत — 111
उस्ताद की तलाश — अजय महताब — 114

नयी सदी : नयी कलम

हशिए पर खड़े मामूली लोगों के कथाकार — प्रेम तिवारी — 120
व्यापक कथा-दृष्टि की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति — अरुण होता — 127
चरित्र की गर्मजोशी और जीवन के ताप का कथाकार — अरुण कुमार — 133
यथार्थ की जमीन पर सृजित गंभीर सरोकारों की कहानियाँ : विजय गौड़ का कथा संसार — गीता दूबे — 138
प्रतिरोध और उम्मीद का कथा संसार — अरुण होता — 144
हाशिये के लोग, दबी हुई आवाजें और कहानियाँ! — प्रकाश कांत — 155
सहमत संसार में असहमति के स्वर-आशीष दशोत्तर की कहानियाँ — राकेश कुमार — 160
नया विमर्श गढ़ती कहानियाँ — डॉ. एस.के. साबिरा — 266
वैश्विक फेनोमेना और गुम होते लोग — डॉ. नीलाभ कुमार — 171
कथायात्रा के टेढ़े मेढ़े रास्ते और समकालीन कहानी की परिधि में रमेश शर्मा की उपस्थिति — उर्मिला आचार्य — 177
कहानी में सामाजिक अंतर्वस्तु और किस्सागोई — अरुण कुमार — 186

परिदृश्य

कहानी की गतिशीलता-7 — तरसेम गुजराल — 190

कविताएँ

भारतेन्दु युग का सामूहिक आर्त्तनाद	पूनम सिंह	203
मौन	शैलेन्द्र शांत	204
प्रेम	विवेक सत्यांशु	205
गमन	इरा श्रीवास्तव	207
दायरे में युद्ध	सुशील स्वतंत्र	211
नव वर्ष, तुम इस तरह आना	प्रणव प्रियदर्शी	209
बुना हुआ स्वेटर	शशांक	213
तिनके	ज्योति देशमुख	216
बुद्ध	रोहित प्रसाद पथिक	218
परिक्रमा		220

'परिकथा' के सदस्यों तक पत्रिका नहीं पहुँच पाने की शिकायतों के बीच यह निर्णय लिया गया है कि 'परिकथा' अब सामान्य डाक से नहीं सिर्फ रजिस्टर्ड डाक से भेजी जायेगी। सदस्यता शूल्क निम्नवत होगी :

दस अंकीय सदस्यता	1000/-
डाक खर्च	500/-
पाँच अंकीय सदस्यता	500/-
डाक खर्च	250/-

इस अंक का मूल्य : 100

पत्रिका आजीवन निशुल्क पाने के लिए सौजन्य सदस्यता : 10,000 रुपये

सभी भुगतान चेक या ड्राफ्ट से या फिर सीधे 'परिकथा' एकाउंट में हो :

PARIKATHA
A/c No. : 50200010771980
Charmwood Village, Surajkund Road
Faridabad-121009
RTGS / NEFT / IFSC : HDFC 0000396

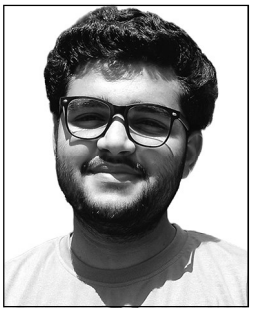

अंतरिक्ष

अंतरिक्ष वर्तमान में संस्कृत महाविद्यालय सुंदरनगर में प्राक शास्त्री-2 (12वीं) के छात्र। अंतरिक्ष को फोटोग्राफी, पेंटिंग और लेखन में रूचि है। अंतरिक्ष की पेंटिंग व रचनाएं कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। लगभग पिछले 12 महीने से अंतरिक्ष फोटोग्राफी कर रहा है और इस छोटे से अंतराल में उसके 100 से अधिक फोटो व डिजिटल आर्ट्स देश-विदेश की जानी-मानी पत्रिकाओं।

संपर्क
सुपुत्र श्री पवन चौहान
गाँव व डाकघर-महादेव, तहसील-सुंदर नगर
जिला-मंड़ी-175018 (हिमाचल प्रदेश)
मो.: 9805402242
ई-मेल: chauhan007pawan@gmailcom

संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यवसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।

रमाशंकर प्रसाद द्वारा अनुज्ञा बुक्स, 1/10206, लेन 1ई, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032 से डॉलफिन प्रिन्टो ग्राफिक्स, 4-ई/7, पाबला बिल्डिंग, झण्डेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110055 से मुद्रित कराकर प्रकाशित।

'परिकथा' में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं।

आवरण-चित्रकार : अंतरिक्ष, गाँव व डाकघर-महादेव, तहसील-सुंदर नगर, जिला-मंड़ी-175018 (हिमाचल प्रदेश) मो.: 9805402242

भीतरी रेखांकन : जयंत, अनुप्रिया, गोविन्द सेन और लोकेश

कम्पोज़िंग : **जोशी टाइपसेटर**, म.नं. 31, गली नं. 37-बी, कौशिक इन्क्लेव, बुराड़ी-110084 मो.: 9650463001

सम्पादकीय

नयी सदी : नयी कलम

साहित्य की दुनिया का यह बहुत सामान्य परिदृश्य है कि जब दो या तीन पीढ़ियों के लेखक साथ-साथ लिख-पढ़ रहे होते हैं, तब तक नयी पीढ़ी भी उभर रही होती है। पिछले सौ वर्षों पर नजर डाली जाये तो यह परिदृश्य बहुत साफ तौर पर दिखायी पड़ता है।

इक्कीसवीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में भी यही परिदृश्य विद्यमान रहा है। एक तरफ जहाँ साठोत्तरी कहानी पीढ़ी, समकालीन कहानी पीढ़ी, सन् पचहत्तर के आसपास उभरी पीढ़ी और सन् पचासी-नब्बे के आसपास उभरी पीढ़ी के लेखक कथाकर्म करते दिखायी पड़ रहे हैं, वहीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका के माध्यम से बिल्कुल नये लेखकों की एक पीढ़ी उभरकर सामने आयी। फिर कुछ और पत्रिकाओं के मंचों से भी नये कथाकारों का आना जारी रहा है।

स्पष्टत: इक्कीसवीं शताब्दी का कथापरिदृश्य पिछली शताब्दी में उभरे कथा लेखकों के कथाकर्म और नयी शताब्दी में उभरे कथा लेखकों के कथाकर्म का मिला-जुला परिदृश्य है।

अब यहीं इस सवाल का उठना भी लाजिमी है कि क्या पिछली शताब्दी में उभरे कथा-लेखकों के कथाकर्म और इक्कीसवीं शताब्दी में उभरे कथा लेखकों के लेखन में मूल्यों, सरोकारों, सोच, दृष्टिकोण या अंतर्वस्तु के स्तर पर समरूपता है या ऐसी किसी समरूपता को ढूंढने की जरुरत ही नहीं है।

इसका जवाब यही बनता है कि निस्संदेह ऐसे तुलनात्मक विवेचन की जरूरत है। बीसवीं शताब्दी स्वाधीनता और नये समाज के लिए स्वप्न और संघर्ष की शताब्दी थी। सामाजिक जीवन में उच्चतर मूल्यों की सर्वोच्चता थी। लेखक-संस्कृति कर्मी इन्हीं मूल्यों के लिए जी-मर रहे थे। 'साहित्य समाज के लिए' का भाव 'साहित्य साहित्य के लिए' के भाव को हाशिए पर ढकेल चुका था। कला को साहित्य के क्षेत्र में लिए उतना ही जरूरी समझा जा रहा था जिस हद तक वह अंतर्वस्तु को स्थूल

और सपाट होने से बचाये, संवेदना के उन्मेष को पाठक के मन-मस्तिष्क तक पहुँचाने में सहयोगी बने, खुद एक प्रतिमान या अनिवार्यता नहीं बन जाये। साहित्य के बाजारूपन और उसके बाजारीकरण के विरुद्ध जबर्दस्त प्रतिरोध था, असहमति थी। लेखन का बहुलांश सामाजिक मूल्यों और सामाजिक स्वप्नों को समर्पित था। उसमें नये समाज के लिए संघर्ष और स्वप्न की अनुगूंजें हैं। उसमें मनुष्यता के आग्रहों और मूल्यों की स्थापना की कोशिशें हैं। कहने की जरूरत नहीं कि ठीक इसके उलट इक्कीसवीं शताब्दी भूमंडलीकृत बाजार-सरोकार, पूँजी, उपभोग-संस्कृति, प्रचार-विज्ञापन और सोच, संवेदना, दृष्टि के बाजारीकरण की शताब्दी है। यह सामाजिक चिंताओं और सरोकारों से विमुखता और वैयक्तिक हितों के बोध की शताब्दी है। यह मनुष्यता और समाजसापेक्ष दृष्टिकोण के क्षरण की शताब्दी है। यह सादगी, चरित्र, परदुखसंलग्नता की बजाय तामझाम, दिखावा, प्रदर्शनप्रियता और स्वार्थपरकता की शताब्दी है। यह यथार्थोन्मुखता से ज्यादा भावजीविता की शताब्दी है। यह कलात्मकता से ज्यादा कलामयता और कला-प्रदर्शन की शताब्दी है।

इक्कीसवीं शताब्दी में उभरकर आये नये लेखक संख्या में नब्बे-सौ से कम नहीं हैं। इस तरह यह विपुल लेखन का दौर है। लेकिन यहाँ यह सवाल भी है कि यह सारा का सारा लेखन पिछली शताब्दी के लेखन की परम्परा में है, उसका विस्तार है, उसका विकास है या इक्कीसवीं शताब्दी के सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक परिदृश्य से उत्प्रेरित और अनुकूलित समाज-निरपेक्ष लेखन है। यह समाज और मनुष्यता के मूल्यों को शक्ति देने वाला लेखन है या इक्कीसवीं सदी के माहौल का हिस्सा बनता हुआ लेखन है? यह समाज, यथार्थोन्मुखता और अंतर्वस्तु की चिंता से निकला लेखन है या आत्मप्रदर्शन, कलाजीविता और स्वांत:सुखाय का लेखन है।

जिन लेखकों, आलोचकों ने इस दौर में उभरे नये लेखकों की कहानियाँ यथासंभव पढ़ी हैं, उनकी राय बंटी हुई है। कुछ मानते हैं, ये कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं, इन्हें पिछली शताब्दी के लेखकों की कहानियों का अगला सकारात्मक विस्तार माना जाना चाहिए। कुछ राय रखते हैं कि इनमें से बहुलांश इक्कीसवीं शताब्दी के परिवेश से असहमत नहीं, उनसे अनुकूलित हैं और प्रभावित हैं और ये पिछली शताब्दी के लेखकों की कहानियों का अगला विस्तार और विकास नहीं बन पायी हैं।

एक राय यह भी है कि हम इन कहानियों के बीच से उन कहानियों का चुनाव करें जो पिछली शताब्दी के लेखकों की कहानियों का अगला विस्तार और विकास है, हम ऐसी कहानियों का मूल्यांकन करें और इन्हें सम्मान दें और जो कहानियाँ इक्कीसवीं शताब्दी के माहौल से अनुकूलित लगती हैं या उनका हिस्सा लगती हैं या महज आत्म-प्रदर्शन या 'साहित्य साहित्य के लिए' या स्वांत:सुखाय की सोच के साथ लिखी गयी हैं या कलाजीविता की कवायद के रूप में लिखी गयी हैं या जो समाज-निरपेक्ष अंतर्वस्तु को समाविष्ट करती हुई दिखती हैं, हम ऐसी कहानियों को नजर अंदाज करें।